17 अक्टूबर 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के
ग्रंथाधिराज समयसार पर
प्रवचनों का प्रसारण
अब **अरिहन्त चैनल** पर
अरिहंत प्रतिदिन
प्रातः 6:08 से 6:38 तक

वर्ष : 43, अंक : 14
अक्टूबर (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)
संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में निम्न गोष्ठियों का आयोजन हुआ -

(1) दिनांक 13 सितम्बर को '**षट् आवश्यक : श्रावकों व श्रमणों के परिप्रेक्ष्य में**' विषय पर अष्टम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर ने की।

इस अवसर पर आवश्यक का स्वरूप व भेद-प्रभेद विषय पर संयम जैन फरीदाबाद, आवश्यकों में शिरोधार्य : देव-गुरु उपासना विषय पर संयम जैन गढाकोटा, स्वाध्याय और उसका चरितार्थ संयम विषय पर हर्षित जैन खनियांधाना, विषयासक्ति निरोधक : तप और दान विषय पर मोनिल जैन निठउआ एवं मोक्षमार्ग में आवश्यकों की आवश्यकता विषय पर अमन जैन अलवर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से असान जैन खनियांधाना ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से ऋतिक जैन शाहगढ ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. फूलचंदजी प्रेमी बनारस ने की।

इस अवसर पर आत्मभावनावर्धक : सामायिक व व्युत्सर्ग विषय पर दर्शन पाटील नांदनी, भेदाभेद-विवक्षा में स्तुति व वन्दना विषय पर अमन जैन दमोह, दोषनिवारक प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान विषय पर कपिल जैन खड़ैरी, आवश्यकों की विविधता : अनुयोगों के आधार पर विषय पर अनर्घ्य जैन विदिशा, आवश्यकद्वय : एक तुलनात्मक अध्ययन विषय पर अतिशय जैन चौरई एवं कब और कैसे आवश्यकमय होवे आचरण विषय पर समकित जैन ने अपने मनोभाव व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से विशाल जैन देवलाली ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से विकास जैन मुम्बई ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता अमन जैन अलवर एवं द्वितीय सत्र में श्रेष्ठ वक्ता अनर्घ्य जैन विदिशा रहे। **(शेष पृष्ठ 5 पर...)**

बाबू युगलजी की स्मृति सभा संपन्न

जैन जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा की पंचम पुण्य स्मृति पर आयोजित चिरंतन सभा श्री कुंदकुंद-कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई के तत्त्वावधान में दो सत्रों में आयोजित की गई।

दिनांक 2 अक्टूबर को आयोजित प्रथम सत्र के अध्यक्ष श्री अनंतराय ए. शेठ मुम्बई एवं मुख्य अतिथि श्री रमेशचंदजी सौगानी कोलकाता थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण डॉ. मनोज जैन जबलपुर ने किया।

ट्रस्ट के मंत्री श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा द्वारा संचालित इस सभा में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. सुदीपकुमारजी जैन दिल्ली, पण्डित प्रकाशभाई कोलकाता, पण्डित चेतनभाई मेहता, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद आदि विद्वानों ने अपने संस्मरण सुनाकर बाबूजी को याद किया। इसके अतिरिक्त श्रीमती आनंदधारा जैन, कोटा ने बाबूजी द्वारा रचित कविता सुनाई।

इस अवसर पर मुमुक्षु समाज की गतिविधियों, समाचारों और समसामयिक घटनाओं को समाज तक पहुंचाने के लिए निर्मित एक नवीन ऐप '**कहान संदेश**' का भव्य लोकार्पण किया गया।

दिनांक 3 अक्टूबर को आयोजित द्वितीय सत्र में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री बसंतभाई दोशी मुंबई एवं मुख्य अतिथि श्री आलोकजी जैन कानपुर थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ अचिंत्य जैन ग्वालियर के मंगलाचरण से हुआ।

श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर द्वारा संचालित इस सभा में श्री पवनजी जैन मंगलायतन, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित ज्ञाताजी झांझरी उज्जैन ने अपने संस्मरण सुनाकर बाबूजी को याद किया। इसके अतिरिक्त श्रीमती चिरंतन और चिदात्मन जैन, कोटा ने बाबूजी द्वारा रचित कविता सुनाई।

कार्यक्रम का संयोजन श्री विरागजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन श्री हर्षवर्धनजी जैन औरंगाबाद ने किया।

⑦ सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रथम अध्याय (पीठबंध प्ररूपण) का सार –

(गतांक से आगे...)

"**जिसप्रकार बड़े दरिद्री को अवलोकनमात्र चिन्तामणि की प्राप्ति हो और वह अवलोकन न करे...**" जैसे कोई गरीब व्यक्ति है, भिखारी है, दर-दर की ठोकरें खा रहा है, उसे चिन्तामणि जैसा महान रत्न मिलने का अवसर मिले, जिससे आगामी उसकी पीढियों की दरिद्रता सदा-सदा के लिये मिट जाये; परन्तु वह व्यक्ति उसे देखने तक के लिये मना कर देवे, आँख उठाकर ना देखे.... इसी प्रकार "**जैसे कोढी को अमृतपान कराये और वह न करे...**" कोई व्यक्ति कोढी हो, कुष्ठ रोग हो गया हो, शरीर के रोम-रोम से दुर्गन्ध आती हो, वह रोग से महापीड़ित हो – ऐसे व्यक्ति को कोई अमृत पिलाये, जिससे उसका पूरा शरीर निरोगी हो सकता हो, दु:ख, दर्द, तकलीफ मिट सकती हो; परन्तु वह मूर्ख व्यक्ति अमृत का सेवन न करे।

हमें दरिद्री और कोढी – दोनों व्यक्ति मूर्ख दिखाई दे रहे हैं, पर पण्डित टोडरमलजी इनके उदाहरण से संसार के दु:खों से पीड़ित जीवों को समझा रहे हैं। वे लिखते हैं – "**...उसीप्रकार संसार-पीड़ित जीव को सुगम मोक्षमार्ग के उपदेश का निमित्त बने और वह अभ्यास न करे, तो उसके अभाग्य की महिमा हमसे तो नहीं हो सकती...।**" अभागे हैं वे जीव, जिनको मुक्ति के मार्ग का उपदेश, जिनवाणी सुनने का अवसर, वीतरागी तत्त्वज्ञान आदि के माध्यम से भव सुधारने का अवसर मिलने पर भी तत्त्वज्ञान का अभ्यास नहीं करते, उनकी किस्मत में ही नहीं है, उनकी होनहार खोटी दिखाई दे रही है, हो सकता है इन्होंने नरक-निगोद, तिर्यंच आदि में से कोई गति बांध ली हो। ऐसे अभागे जीवों के बारे में हम क्या कहें।

यदि हमें कोई ऐसे अभागे जीव दिखते हों तो भी उनको समझाना और तत्त्व की बात बताना नहीं छोड़ देना चाहिये, क्योंकि क्या पता किसका भाग्य कब बदल जाये, इसलिये तत्त्व की बात जो हमें मिल गई है, वह सबको समझाने का भाव रखना, सहजता से सबको बताना, सुनने वालों को प्रेरणा देना, स्वाध्याय के लिये प्रेरित करना।

आज वीतराग-विज्ञान शिविरों के माध्यम से चारों तरफ ज्ञान-गंगा बह रही है..., क्या पता कौनसे व्यक्ति का सद्भाग्य कब जागृत हो जाये? किसका जीवन कब बदल जाये? किसकी किस्मत कब खुल जाये? परन्तु इतना उत्कृष्ट तत्त्वज्ञान मिलने पर भी जो व्यक्ति नहीं समझे, जिनवाणी की बात को न स्वीकार करे तो पण्डितजी कहते हैं कि – "**...उसके अभाग्य की महिमा हमसे तो नहीं हो सकती। उसकी होनहार ही का विचार करने पर अपने को समता आती है।**"– ये बातें हमारे लिये नहीं कह रहे हैं। हाँ! यदि हममें से भी कभी किसी को ऐसा लगता हो कि अब कितना सुनें....कितना पढें....अब शिविर लगा है, दस दिन की बात है, चलो सुन लेते हैं..., रोज-रोज कोई सुना जाता है क्या....तो भैया यह समझना कि दुर्भाग्य निकट है।

उपदेशसिद्धांत रत्नमाला की गाथा उद्धृत करते हुए पण्डितजी ने कहा स्वाधीन उपदेशदाता गुरु का योग बने और योग मिलने पर भी जो जीव धर्मवचनों को नहीं सुने, वे ढीठ हैं, दुष्ट चित्त वाले हैं। तीर्थंकर आदि जीव भी जिस संसार भय से डरकर, छोड़कर चले गये, उन्हें उस संसार से डर नहीं लगता, वे कितने सुभट हैं, उनकी होनहार का विचार करने पर समता आती है।

प्रवचनसार ग्रंथ में कहा है कि पहले आगम ज्ञान ही उपादेय है, इसलिये हमारा मुख्य कर्तव्य तो आगमज्ञान-शास्त्राभ्यास करना है। पण्डितजी बताना चाहते हैं कि धर्म के बहुत सारे अंग हैं, बहुत स्तर हैं, उनमें सबसे बड़ा धर्म तो ध्यान है। उपयोग की एकाग्रतापूर्वक अपने आत्मस्वरूप का ध्यान करना – ये तो सर्वोत्कृष्ट धर्म है; लेकिन उस ध्यान को छोड़कर यदि किसी को दूसरा नम्बर देना हो, तो वह है आगम ज्ञान, शास्त्राभ्यास। देखिये! यहाँ यह नहीं कहा कि व्रत करो, उपवास करो, माला का जाप करो...; यहाँ तो यह कह रहे हैं कि जैसे बन पड़े शास्त्राभ्यास करो, आगम का अभ्यास करो, जिनवाणी का अभ्यास करो, पढो-पढाओ, सुनो-सुनाओ, सुनने वालों को प्रेरणा दो।

इसप्रकार प्रेरणापूर्वक पण्डितजी ने ग्रंथ की भूमिका को पूर्ण किया। पण्डितजी अभी जो ग्रंथ बना रहे हैं, उसमें धीरे-धीरे आगे मोक्षमार्ग का प्रकाशन करेंगे। इस ग्रंथ का वांचना, सुनना, विचारना सरल है, यह ग्रंथ कठिन नहीं है, इसके लिये ज्यादा व्याकरणादिक का ज्ञान नहीं चाहिये। इसलिये हमें इस ग्रंथ का अभ्यास करना चाहिये यदि हमारी बुद्धि इसमें वर्तेगी, यदि हम इसका आद्योपान्त गहराई से अध्ययन करेंगे, तो पण्डितजी कह रहे हैं कि तुम्हारा अवश्य कल्याण होगा। मानो एक प्रकार से टोडरमलजी भली होनहार कहकर हमें आशीर्वाद दे रहे हैं कि हे भव्य जीवों! तुम्हारा कल्याण होगा।

पण्डित टोडरमलजी का ऐसा करुणाभरा वचन सुनकर हम सब इस मोक्षमार्गप्रकाशक नामक ग्रंथ के आद्योपान्त स्वाध्याय का संकल्प लेवें, आराधना के मार्ग पर बढते हुए निरन्तर आत्मकल्याण करें – इसी मंगल भावना से विराम लेता हूँ। ●

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

5 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 54 – स्वभाव में स्थित से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – भेदविज्ञान के बल से सभी परद्रव्यों में अपनापन तोड़कर जब जीव अपने त्रिकाली ध्रुव निज भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित करता है, उसे ही अपना जानता–मानता है, उसमें ही जमता–रमता है, तब उसे स्वभाव में स्थित (स्वसमय) कहते हैं।

प्रश्न 55 – परभाव में स्थित का क्या तात्पर्य है?

उत्तर – जब जीव पुद्गल कर्म के उदय में निमित्त से प्राप्त संयोगों में, संयोगी भावों में अपनापन स्थापित करता है, उन्हें ही अपना जानता–मानता है, उनमें ही जमता–रमता है, तब उसे ही परभाव में स्थित (परसमय) कहते हैं।

प्रश्न 56 – यहाँ संयोगों में किसे लिया है?

उत्तर – संयोगों में शरीर से लेकर स्त्री, पुत्रादि, नगरादि सभी बाह्य पदार्थों को लिया है।

प्रश्न 57 – संयोगी भाव किन्हें कहा है?

उत्तर – मोह–राग–द्वेष भावों को।

प्रश्न 58 – जगत के सभी द्रव्यों में कितनी विशेषताएं समानरूप से पायी जाती हैं?

उत्तर – जगत के सभी द्रव्यों में चार विशेषताएं समानरूप से पायी जाती हैं –

(1) जीवादि सभी पदार्थ अपने में ही मग्न हैं, अपने गुण–पर्यायों को ही आलंगित करते हैं, पर को स्पर्श तक नहीं करते।

(2) वे एक क्षेत्रावगाह से अत्यंत निकट रहने पर भी, अपने स्वरूप को नहीं छोड़ते, अपने स्वभाव से च्युत नहीं होते।

(3) पररूप परिणमन न करने से वे टंकोत्कीर्ण की भांति अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को धारण किये रहते हैं। अपनी इकाई को कायम रखते हैं।

(4) उत्पाद और व्यय तथा उत्पाद–व्यय और ध्रौव्य जैसे विरोधी स्वभावों को एक साथ धारण करके वे विश्व का उपकार करते हैं/टिकाए रखते हैं।

प्रश्न 59 – काम–भोग–बन्ध कथा विसंवाद (दुविधा) पैदा करने वाली क्यों है?

उत्तर – जब दो द्रव्य भिन्न–भिन्न अपने–अपने में ही रहते हैं, कोई किसी को छूता भी नहीं है, तो फिर आत्मा पुद्गल के प्रदशों में स्थित कैसे हो सकता है? यही कारण है कि बन्ध कथा विसंवाद पैदा करती है।

(क्रमशः)

स्नेह मिलन समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में शास्त्री तृतीय वर्ष की परीक्षा देने हेतु आये 43 छात्र एवं आचार्य द्वितीय वर्ष की परीक्षा देने हेतु आये 09 छात्र एवं अधिकारियों की उपस्थिति में दिनांक 11 अक्टूबर को स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि ये सभी दिनाँक 01 अक्टूबर से स्मारक परिसर आये हुए हैं और अत्यंत सुरक्षित माहौल में एक दूसरे से मिले बिना ही अध्ययन कर रहे हैं और कॉलेज की परीक्षाएं दे रहे हैं। आदरणीय छोटे दादा की छात्रों से मिलने की प्रबल इच्छा को देखते हुए उनके निर्देशानुसार रविवार अवकाश के दिन सोशल डिस्टेंस के साथ प्रवचन हॉल में छात्रों को एकत्रितकर स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

आदरणीय छोटे दादा एवं अधिकारियों का छात्रों से एवं छात्रों का अपने गुरुओं से मिलने से एकदम भावुक वातावरण हो गया था।

इस अवसर पर डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने छात्रों को संबोधित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की एवं स्वाध्याय करते रहने की प्रेरणा दी।

आदरणीय छोटे दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में छात्रों से कहा कि इस तत्त्वज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने के लिए हम सबको शांति का मार्ग अपनाना होगा, लोगों का विश्वास जीते बिना समाज में रहकर कार्य नहीं किया जा सकता। गोली का जवाब गोली से तो दूर, गोली का जवाब गाली से भी नहीं – इस नीति के अनुसार हमें कार्य करना होगा। संस्था सदैव सभी छात्रों के साथ है। हम सबको गुरुदेवश्री के समान अपने आत्मकल्याण को ऊर्ध्व रखकर किसी की निन्दा और वाद–प्रतिवाद से बचकर तत्त्वप्रचार के कार्य को करते रहना चाहिए।

छात्रों में शास्त्री तृतीय वर्ष से मयंक जैन बंडा, समर्थ जैन विदिशा, आयुष जैन पिपरिया ने वक्तव्य से एवं निखिल जैन फिरोजाबाद ने कविता के माध्यम से और आचार्य द्वितीय वर्ष से सौरभ जैन डूंगासरा ने स्मारक एवं अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

सभा में श्रीमंतजी शास्त्री, गौरवजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल भी उपस्थित थे। सभा का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय–6 (कुदेव, कुगुरु और कुधर्म का प्रतिषेध)

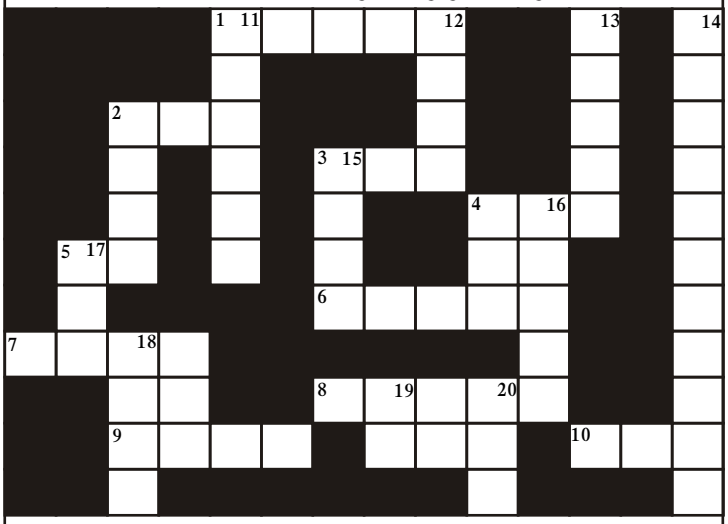

बाएं से दाएं –

1. जिनेन्द्र द्वारा उपदेशित धर्म का मूल है (दर्शनपाहुड) (5)
2. छठवें अधिकार में प्रतिनिषिद्धों में से एक (3)
3. कुदेवों में से एक प्रकार (3)
4. कुदेवों के पैरों में पड़ने का कारण (दर्शनपाहुड) (3)
5. धर्मपद्धति में किसकी अपेक्षा महन्तपना संभव नहीं है (2)
6. शरीर से अनुराग घटने पर क्या करना चाहिये (5)
7. मुनिराजों और श्रावकों के 28 और 8 क्रमश: ..... होते हैं (4)
8. किस रूप प्रवृत्ति से हिंसादिरूप पाप बहुत उत्पन्न होते हैं (5)
9. कुगुरु स्वयं के स्वयं से जो ऊँचे नाम रखते हैं, उनमें से एक (4)
10. यह जीव मोहित होकर रोड़ों आदि को भी पूजता है, मिथ्यात्व की ..... है (3)

ऊपर से नीचे –

11. व्यंतरादि का अधिकार जहाँ नहीं है (6)
12. कुगुरु अपने सामने अन्यों से जिस रूप क्रिया कराते हैं (4)
13. कुदेवादिक का त्याग न करने से कैसा भाव पुष्ट होता है (5)
14. भाटवत् दातार की स्तुति कराकर दानादि ग्रहण करते हैं, वे पात्र संसार में डूबते हैं, यह उद्धरण किस ग्रंथ का है (11)
15. संक्रांति, ग्रहण और ..... में दान देकर धर्म मानना कुधर्म है (4)
16. 'सत्पुरुषों को दान देना कल्पवृक्ष के समान है', यह किस ग्रंथ से लिया है (3)
17. पार्श्वस्थ, ...आदि भ्रष्टाचारियों में मुनिपने का निषेध है (3)
18. जो मुनि नगर में रहते हैं, उनको मृगवत् कहने वाले आचार्य हैं (4)
19. कुगुरु अपना नाम धराते हैं, कोई एक (2)
20. जो दर्शन, ज्ञान और ..... से भ्रष्ट हैं, उनको निर्वाण नहीं हो सकता (3)

प्रस्तुति – आप्तअनुशील शास्त्री, दमोह

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर वाट्सअप पर ही भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 10 नवम्बर 2020 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

वाट्सअप पर भेजने हेतु –9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

पण्डित टोडरमल जी की त्री शताब्दी जन्म वर्ष के उपलक्ष में –

कविता

सवेरा होता है हर रोज, हुआ था उस दिन भी जग में।
परन्तु एक सूर्य ही नहीं, उदित थे दो दो इस नभ में।।
प्रथम था पूर्व दिशा में उदित, दूसरा जयपुर माही महान।
जने थे पंडित टोडरमल, कहत आचार्य कल्प ये जहान।।
आज से तीन शती के पूर्व, हुआ था भूतल पर उपकार।
तथा इस जिनशासन को भी, मिला था अद्भुत रत्नाकार।।
रूढ़ियों की कड़ियों को तोड़, कर दिया राग धर्म कमजोर।
हटाया सामाजिक मन मोड़, लगाया जिनवाणी की ओर।।
जगत से लेना ना देना, स्वयं में लीन रहे हर वक्त।
सहज अर सरल स्वभावी मय, बिताया जीवन का हर वक्त।।
तत्त्व आराधक अभ्यासी, प्रगट था उनमें शिष्टाचार।
सुगमता से करते हर कार्य, प्रबल था हिय में तत्त्व प्रचार।।
इसलिए तो, डंके की चोट, किया उनने हर सार्थक कर्म।
निडरता हिय में थापित कर, बताया जन जन को सत मर्म।।
बन पड़ी आयु पर जब बात, नहीं जब कोई था संग साथ।
घोषणा मरण दण्ड पर भी, देह छोड़ा समाधि के साथ।।
दे गए हमको वे सद् शास्त्र, कहे कल्याण करो अपना।
जगत के भव्य तुम्हीं शिव हो, स्वयं कल्याण करो अपना।।
स्वयं कल्याण करो अपना, स्वयं से हो जाओ तुम सहज।
यही है मोक्षमार्ग का सार, प्रकाशित है तुमको जो सहज।।
सहज थे पण्डित टोडरमल, सहज हैं, रचित आपके ग्रंथ।
सहजता प्रगटे अध्ययन से, सहजता से बनते निर्ग्रन्थ।।
प्रगटाऊं निरग्रंथता, सहज समाधि रूप।
निज स्वरूप की प्राप्ति में, समर्थ आत्म निजभूप।।

– समर्थ जैन, हरदा (शास्त्री प्रथम वर्ष)

लोगो का लोकार्पण

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को समयसार मिलने के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आगामी वर्ष से आयोजित होने वाले 'समयसार कहान शताब्दी महोत्सव' की तैयारियाँ पूरे जोर–शोर से चल रही हैं। इस महोत्सव में पूरे 1 वर्ष तक अनेक छोटे–बड़े आयोजन किए जाएंगे।

इस महोत्सव के लिए दिनांक 3 अक्टूबर को समिति द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर लोगो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत देश के अनेक उदीयमान प्रतिभाशाली साधर्मियों ने सहभागिता की और विभिन्न विद्वानों की समिति ने श्री नीलेश जैन जबलपुर के बनाये गये लोगो को निर्णायक रूप से चुना है। इस लोगो में इस महोत्सव की सारी विषय–वस्तु समाहित की गई है। कार्यक्रम के निर्देशक पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने बाबू युगलजी की स्मृति में आयोजित चिरंतन कार्यक्रम श्री अनन्तभाई ए. सेठ, श्री बसंतभाई दोशी, श्री महीपालजी बांसवाड़ा, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित विपिनजी मुंबई, पण्डित नगेशजी पिडावा, पण्डित अमित अरिहंत आदि अनेक विद्वानों और साधर्मियों की उपस्थिति में इस चयनित लोगो की घोषणा की। चयनित लोगो के साथ सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार दिया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन समिति के महामंत्री श्री विजयजी बड़जात्या ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

(2) दिनांक 20 सितम्बर को '**रहस्य : रहस्यमयी भक्तामर का**' विषय पर नवम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर ने की।

इस अवसर पर स्तोत्र सृजकों में शिरोधार्य : आचार्य मानतुंग विषय पर ध्रुव जैन इन्दौर, भक्तामर एवं उसके व्याख्याचित्र : एक अवलोकन विषय पर गौतम गणधर प्रधान केरबना, वीतरागता का अद्भुत प्रतिपादक : भक्तामर (8–16) विषय पर निखिल जैन फिरोजाबाद, सर्वज्ञता हितोपदेशिता प्रकाशक : भक्तामर दीप (16–27) विषय पर मोहित जैन फुटेरा एवं जे नर पढैं सुभावसों, ते पावैं शिवखेत (48) विषय पर विराग बेलोकर ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से अनुज जैन भगवां ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से शरत कुमार चेन्नई ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा ने की।

इस अवसर पर स्तुति स्तुत्य व स्तोता का स्वरूप (1–6) विषय पर अरविन्द जैन खड़ैरी, भक्तामर में प्रातिहार्याष्टक : एक अध्ययन (28–35) विषय पर मिनियन जैन मण्डीदीप, निर्भयता का रामबाण उपाय : भक्तामर (36–47) विषय पर सर्वज्ञ जैन बरगी, भक्तामर : संस्कृत साहित्य के आलोक में विषय पर शाश्वत जैन भोपाल एवं भक्तामर संबंधी भ्रांतियाँ व निराकरण विषय पर दीपक जैन बमनपुरा ने अपने विचार व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से जयंत जैन बालोतरा ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अंकुर जैन खड़ैरी ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता मोहित जैन फुटेरा एवं द्वितीय सत्र में श्रेष्ठ वक्ता सर्वज्ञ जैन बरगी रहे।

(3) दिनांक 27 सितम्बर को '**निमित्त–उपादान : एक विमर्श**' विषय पर दशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली ने की।

इस अवसर पर कारण कार्य मीमांसा विषय पर अक्षय जैन फुटेरा, कारण के भेद–प्रभेद विषय पर चेतन जैन रहली, कार्य की उत्पादक सामग्री : उपादान विषय पर मानस जैन बांसवाड़ा, कार्य की सहायक सामग्री : निमित्त विषय पर उत्सव जैन बकस्वाहा एवं उपादान के साथ ही है निमित्त बलवान विषय पर सर्वज्ञ जैन गुढाचन्द्रजी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से अनीश जैन ग्वालियर ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से एकांश जैन खड़ैरी ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल ने की।

इस अवसर पर पंच समवाय में निमित्त–उपादान विषय पर सिद्धांत उपाध्याय सांगली, निमित्त–नैमित्तिक संबंध कहाँ? विषय पर अभिषेक जैन भोपाल, निमित्त–उपादान की मुख्यता–गौणता : अनुयोगों में विषय पर निमित्त अजमेरा इन्दौर, निमित्त अकिंचित्कर क्यों? विषय पर आकाश जैन हीरापुर एवं निमित्त उपादान से भेदविज्ञान की सिद्धि विषय पर आयुष जैन मडदेवरा ने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से प्रशांत जैन भिण्ड ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से संयम जैन तिगोड़ा ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता मानस जैन बांसवाड़ा एवं द्वितीय सत्र में श्रेष्ठ वक्ता आयुष जैन मडदेवरा रहे।

(4) दिनांक 4 अक्टूबर को '**द्रव्यसंग्रह : एक परिशीलन**' विषय पर एकादशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री खड़ैरी ने की।

इस अवसर पर ग्रंथ एवं ग्रंथकार : एक विवेचन विषय पर स्वस्ति जैन मिरज, जीवद्रव्य का सामान्य स्वरूप विषय पर विशाल मेहता देवलाली, अजीवद्रव्यों का सामान्य स्वरूप विषय पर अक्षत जैन पिड़ावा एवं लघुपंचास्तिकायसंग्रह : द्रव्यसंग्रह विषय पर पुष्प जैन आगरा ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से निखिलेश मैंद ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से आयुष जैन शाहगढ ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित संदीपजी शास्त्री डडूका ने की।

इस अवसर पर द्रव्य के द्रव्यादिचतुष्टयों का समन्वय विषय पर समर्थ जैन हरदा, जीवाजीवविशेषद्वय : सप्त तत्त्व व नवपदार्थ विषय पर आशुतोष जैन आरोन, मोक्षमार्ग : निश्चय–व्यवहार की दृष्टि में विषय पर संवेग जैन उदयपुर, ध्यान : क्या?क्यों?कैसे? विषय पर भरमप्पा लोकन्नावर कर्नाटक एवं मा चिट्ठह मा जंपह मा चिंतह विषय पर आकाश जैन मौ ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से श्रेयांस चंदन इचलकरंजी ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से प्रतीक हरावत रिसोड़ ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता पुष्प जैन आगरा एवं द्वितीय सत्र में श्रेष्ठ वक्ता आकाश जैन मौ रहे।

सभी गोष्ठियों के संयोजक शास्त्री तृतीय वर्ष से संभव जैन दिल्ली, पवित्र जैन आगरा, अमन जैन आरोन, अखिल जैन मण्डीदीप, आप्तअनुशील जैन दमोह थे। आभार प्रदर्शन डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया। ●

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक से प्रकाशित जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) एवं वीतराग–विज्ञान (मासिक) पत्रिकाएं ईमेल या मोबाइल पर मंगाने हेतु –

सम्पर्क करें – 9660668506 **(पीयूष कुमार जैन)**

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

10

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

चौथा छन्द

(गतांक से आगे...)

तीसरे छन्द में कर्तृत्व और भोक्तृत्व की चर्चा के उपरान्त अब चौथे छन्द में समागत विषयवस्तु की चर्चा करते हैं।

चौथा छन्द इसप्रकार है -

मैं शुद्ध, बुद्ध, अविरुद्ध, एक
पर-परिणति से अप्रभावी हूँ।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्त्व,
मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ।। ४।।

मैं शुद्ध हूँ, बुद्ध हूँ, अविरुद्ध हूँ और एक हूँ। मैं पर पदार्थों और उनकी परिणति से पूर्णतः अप्रभावित हूँ। मेरे ऊपर पर पदार्थों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। **आत्मानुभूति से प्राप्त होनेवाला मैं ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मतत्त्व हूँ।**

दस प्रकार के द्रव्यार्थिकनयों में परमभावग्राही द्रव्यार्थिक नामक दसवें नय का एवं चार प्रकार के निश्चयनयों में से परमशुद्ध निश्चयनय का विषयभूत शुद्ध-बुद्ध आत्मतत्त्व ही मैं हूँ - यहाँ यह कहा जा रहा है।

परमशुद्ध निश्चयनय तथा परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय का स्वरूप समझने के लिये चार प्रकार के निश्चयनय और दस प्रकार के द्रव्यार्थिकनयों का स्वरूप समझना आवश्यक है।

इनका विस्तृत विवेचन **परमभावप्रकाशक नयचक्र** के प्रथम व द्वितीय अध्यायों में दिया गया है। जिज्ञासुओं को विशेष जानने के लिये परमभावप्रकाशक नयचक्र का अध्ययन करना चाहिये।

यहाँ उनका मात्र सामान्य स्वरूप दिया जा रहा है -

निश्चयनय दो प्रकार का है - १. शुद्ध निश्चयनय और २. अशुद्ध निश्चयनय।

शुद्ध निश्चयनय तीन प्रकार का है - १. एकदेशशुद्ध निश्चयनय २. साक्षात् शुद्धनिश्चयनय और ३. **परमशुद्ध निश्चयनय।**

अशुद्ध निश्चयनय एक ही प्रकार का है।

इसप्रकार कुल मिलाकर निश्चयनय चार प्रकार का हो गया; जो इसप्रकार है -

१. अशुद्ध निश्चयनय
२. एकदेशशुद्ध निश्चयनय
३. साक्षात्शुद्ध निश्चयनय
४. **परमशुद्ध निश्चयनय**

इन्हें निम्नांकित चार्ट से समझ सकते हैं -

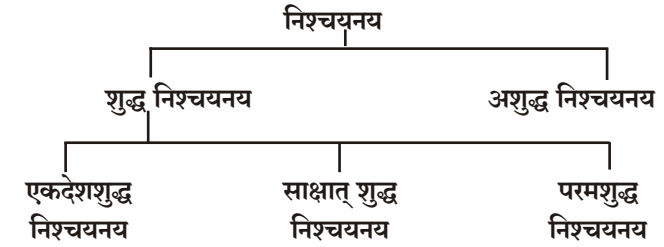

१. 'अभेद सो निश्चय' इस परिभाषा के अनुसार रागादिभावों से अभेदरूप निरूपण अशुद्ध निश्चयनय है। इस नय के उदाहरण होंगे - **रागी जीव, मिथ्यादृष्टि जीव।**

२. एकदेशशुद्ध निर्मलपर्यायों से आत्मा को अभेद बताने वाला नय एकदेशशुद्ध निश्चयनय है। इसका उदाहरण है **सम्यग्दृष्टि जीव।**

३. पूर्णशुद्ध निर्मलपर्यायों से अभेद बताने वाला साक्षात् शुद्धनिश्चयनय होता है। जैसे **आत्मा को केवलज्ञानी कहना।**

४. उक्त तीनों नय पर्याय सहित आत्मा को देखने वाले नय हैं; किन्तु **चौथा परमशुद्धनिश्चयनय शुद्ध-अशुद्ध सभी पर्यायों से रहित त्रिकाली ध्रुव वस्तु को देखने वाला नय है।**

इस गीत में जो **शुद्ध** पद का प्रयोग किया गया है; उसका वाच्य **परमशुद्धनिश्चय संबंधी अनादि-अनन्त स्वभावगत शुद्धता है।**

द्रव्यार्थिकनय दस प्रकार के होते हैं - जिनके नाम क्रमशः इसप्रकार हैं -

१. कर्मोपाधि निरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय
२. भेदकल्पना निरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय
३. उत्पाद-व्यय निरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय
४. कर्मोपाधि सापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय
५. भेदकल्पना सापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय

६. उत्पाद–व्यय सापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय

७. अन्वय द्रव्यार्थिकनय

८. स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय

९. परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय

१०. **परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय**

इन सभी नयों का स्वरूप इनके नामों से ही बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है।

इसप्रकरण में कर्मोपाधि, भेदकल्पना और उत्पाद–व्यय से निरपेक्षता ही शुद्धता है और इनसे सापेक्षता अशुद्धता है।

इसप्रकार आरंभ के ६ नयों में से आरंभ के तीन शुद्ध द्रव्यार्थिकनय हैं और बाद के तीन अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय हैं।

शेष चार नयों में शुद्धता–अशुद्धता सम्बन्धी कोई भेद नहीं है।

इस अध्यात्मगीत में जिस शुद्धता की बात की है, वह शुद्धता उक्त तीन शुद्ध नयों वाली शुद्धता नहीं है; अपितु परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय की विषयभूत शुद्ध वस्तु है।

मैं शुद्ध-बुद्ध का अर्थ त्रिकाली ध्रुव द्रव्य है, जो परभावग्राही दसवें द्रव्यार्थिकनय का विषय है।

दसवें द्रव्यार्थिकनय की परिभाषा माइल्ल धवल के **द्रव्यस्वभाव प्रकाशक नयचक्र** में इसप्रकार दी गई है –

''गेण्हइ दव्वसहावं असुद्धसुद्धोवयारपरिचत्तं।
सो परमभावगाही णायव्वो सिद्धिकामेण।।१९८।।

जो शुद्ध, अशुद्ध और उपचरितस्वभाव से रहित द्रव्य–स्वभाव (परमस्वभाव) को ग्रहण करता है, वह परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय है। सिद्धि की कामना रखनेवालों को उसे अच्छी तरह जानना चाहिये।''

द्रव्यस्वभाव की विशेषता बताते हुए वे उसे शुद्ध, अशुद्ध और उपचरित स्वभाव से रहित बताते हैं; अत: पहले इन्हें जान लेना आवश्यक है।

शुद्ध, अशुद्ध और उपचरित स्वभावों को ग्रहण करनेवाले नयों की चर्चा 'आलापपद्धति' में इसप्रकार की गयी है –

''शुद्धद्रव्यार्थिकेन शुद्धस्वभाव:, अशुद्धद्रव्यार्थिकेन अशुद्ध–स्वभाव:, असद्भूतव्यवहारेणोपचरितस्वभाव:।[१]

१. आलापपद्धति, पृष्ठ – २२४

शुद्धद्रव्यार्थिकनय से शुद्धस्वभाव है, अशुद्धद्रव्यार्थिकनय से अशुद्धस्वभाव है और असद्भूतव्यवहारनय से उपचरितस्वभाव है।''

उक्त कथन से यह प्रतीत होता है कि परमस्वभावग्राही द्रव्यार्थिकनय का विषयभूत द्रव्यस्वभाव तीनों प्रकार के शुद्धनयों की विषयभूत शुद्धता (निरपेक्षता), तीनों प्रकार के अशुद्धनयों की विषयभूत अशुद्धता (सापेक्षता) एवं असद्भूतव्यवहारनय के विषयभूत संयोगादि से रहित है। सद्भूतव्यवहारनय के भेद भी शुद्ध एवं अशुद्ध के रूप में किये जाते हैं; अत: शुद्ध, अशुद्ध और उपचरित से रहित में सद्भूत एवं असद्भूत दोनों प्रकार के व्यवहारनयों का निषेध भी समाहित हो जाता है।

इसप्रकार यह द्रव्यस्वभाव संयोग एवं सापेक्षता–निरपेक्षता के विकल्पों से भी परे परमस्वभावरूप है। परमपारिणामिकभावरूप होने से ही इस द्रव्यस्वभाव का नाम परमभाव पड़ा है।

आचार्य जयसेन के निम्नलिखित कथन से यह बात सहज ही स्पष्ट हो जाती है –

''औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक और औदयिक–भाव तो **पर्यायरूप** हैं, एक शुद्ध (परम) पारिणामिकभाव ही **द्रव्यरूप** है। पदार्थ परस्पर सापेक्ष **द्रव्य–पर्यायरूप** हैं।

(क्रमश:)

शोक समाचार

(1) भिण्डर–उदयपुर (राज.) निवासी पण्डित छोगालालजी हाथी का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 13 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप गहन तत्त्वाभ्यासी, स्वाध्याय प्रेमी एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान हेतु कुल 2100/– रुपये प्राप्त हुए।

(2) एटा (उ.प्र.) निवासी श्री अजितकुमारजी जैन का दिनांक 12 सितम्बर को 80 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन ज्ञान प्रसार समिति एटा के लगभग 30 वर्षों तक मंत्री रहे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 501/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

17 अक्टूबर 2020, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा
श्री टोडरमल स्मारक भवन में

23वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर ऑनलाइन

रविवार, दिनांक 1 नवम्बर से 8 नवम्बर, 2020 तक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित इस शिविर में विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन/अध्यापन किया/कराया जायेगा।

अत: अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर शास्त्री विद्यार्थियों के लिये तो उपयोगी होगा ही, जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये भी एक स्वर्ण अवसर होगा।

सभी साधर्मीजन ऑनलाइन शिविर का अवश्य लाभ लें।

-: संपर्क सूत्र :-

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन नं.-0141-2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

पुन: पा लेगा अपना जीवत्व

- डॉ. शान्तिकुमार पाटील

कहाँ गया वह जीवत्व शक्ति से संपन्न जीवात्मा?
मुर्दों के शहर में खो गया कहीं,
भूलकर अपने अमृतसागर को,
मृतक कलेवर में एकत्व कर बैठा।
फिर खो गया स्त्री-पुरुष में,
पुत्र-भाई में, पिता-माता में,
दादा-नाना में और ना जाने किन-किन में,
इनको सम्हालते हुए उलझ गया,
मोह माया व ममता में।
परिणामत:....चला गया कूकर शूकर में,
और फिर नरक निगोदों में....क्यों?
क्योंकि भूल गया सिद्धों सी सदृशता,
अरहन्तों की अनन्यता, आचार्यों का आदेश,
व उपाध्यायों के उपदेश।
नहीं देखा इसने साधुत्व का सपना,
नहीं लिया संयम का लाभ और
इसके लिये कभी नहीं की सम्यक्त्व की साधना
अब भी यह करें - आगम का सेवन,
लेवें युक्ति का अवलम्बन,
मानें पर अपर गुरु का उपदेश - तो
निश्चित ही स्वसंवेदन की संजीवनी से
पुन: पा लेगा अपना जीवत्व।

हार्दिक धन्यवाद!

जयपुर (राज.) निवासी श्री ताराचंदजी सौगानी के 83वें जन्मदिवस (2 अक्टूबर) के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी टोडरमल महाविद्यालय के एक विद्यार्थी के एक वर्ष के व्यय के रूप में 30,000/- रुपये की राशि प्राप्त हुई। हार्दिक धन्यवाद!

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2020

प्रति,